CPL-1 Examination
प्राकृत साहित्य का इतिहास
Paper- CPL-01

Time Allowed : Three Hours **Maximum Marks : 100**

There are 50 multiple choice question in this paper. Attemt all questions. Each question carries 2 marks. You have to answer the question by marking A/B/C or D in the OMR Sheet supplied to you alongwith the question paper. You must also darken the relevant option by making use of H.B. Pencil/ Blue Ball Pen/ Black Ball Pen. No marks will be deducted for wrong answer.

यह प्रश्नपत्र कुल 50 बहुवैकल्पिक प्रश्नों का है। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है। आपको प्रश्नों के उत्तर अ/ब/स अथवा द का चयन करते हुए प्रश्नपत्र के साथ वी **OMR Sheet** में दर्ज करने हैं। साथ ही सम्बन्धित गोले को भी एच. बी. पेन्सिल/ नीले बाॅल पेन/ अथवा काले बाॅल पेन से भरा जाना है। गलत उत्तर के लिए अंकों की कटौती नहीं की जायेगी।

१. ग्रीक राजा किस धर्म के अनुयायी थे।

(अ) जैन धर्म (ब)वैष्णव धर्म

(स) ईसाई धर्म (द)बौद्धधर्म

२. ग्रीक राजाओं के समय मध्य एशिया में राजभाषा का सम्मान प्राप्त हुआ।

(अ) प्राकृत भाषा (ब)संस्कृत भाषा

(स) अपभंश (द)अर्धमागधी

३. देशीनाममाला कोश के लेखक कौन है।

(अ) आचार्य हेमचन्द्र (ब)साध्वी कांचन कुमारी

(स) श्री चन्दन मुनि (द)पं. दामोदर शास्त्री

४. प्राकृत कोश-ग्रंथों में स्वतंत्र रूप से रचित सर्व प्राचीन कोश ग्रन्थ है।

(अ) देशीनाममाला (ब)आचारांग

(स) उक्ति व्यक्ति प्रकरण (द)पाइयलच्छीनाममाला

५. पाइयलच्छीनाममाला के रचनाकार है।

(अ) कवि धनपाल (ब)हेमचन्द्र आचार्य

(स) विजय राजेन्द्र सूरि (द)पं. दामोदर शास्त्री

६. अर्धमागधी कोश का रचना काल है।

(अ) १९२३-१९३८ ईसवीं (ब)१८७५-१८९० ईसवीं

(स) ६००-६६५ ई. पू. (द)१७७२-१७८० ईसवीं

७. जोणिपाहुण शास्त्र की रचना की गई।

(अ) ११६० वि. सं. (ब)१५५६ वि. सं.

(स) १३६२ वि. सं. (द)१७५२ वि. सं.

८. सुभिक्ष-दुभिक्ष की जानकारी बतलाने वाला गं्रथ है।

(अ) जोणिपाहुण (ब)जोइससार

(स) गणिविद्या प्रकीर्णक (द)लोकविजययन्त्र

९. साहित्य दर्पण ग्रंथ में प्राकृत भाषा के कितने पद्य उद्धृत है।

(अ) २४ पद (ब)४८ पद

(स) ३१२ पद (द)५ पद

१०. काव्य प्रकाश पर आधारित टीका ग्रन्थ है।

(अ) रत्न परीक्षा (ब)साहित्य दर्पण

(स)काव्यानुशासन (द)काव्यादर्श

११. हाथी गुम्फा शिलालेख किस शताब्दी में उत्कीर्ण है

(अ) ईसा पू. चौथी शताब्दी (ब)ईसा पू. दूसरी शताब्दी

(स)ईसा पू. छटवीं शताब्दीी (द)ईसा पू. सातवीं शताब्दी

१२. भगवान महावीर के निर्वाण के ८४ वर्ष बाद का शिलालेख है-

(अ) मज्झमिका नगरी का प्राकृत शिलालेख (ब)चन्द्रगुप्त वसति के प्राकृत शिलालेख

(स)मथुरा के जैन प्राकृत शिलालेख (द)सातवाहन राजाओं के प्राकृत शिलालेख

१३. मौर्य साम्राज्य के समय राजभाषा थी।

(अ) हिन्दी (ब)उर्दू

(स)प्राकृत (द)मराठी

१४. गौतमी पुत्र शातकर्णी का नासिक गुफा अभिलेख किस लिपि में है।

(अ) ब्राह्मी (ब)खरोष्टी

(स) दोनों (द)कोई नही

१५. मौर्य राजाओं के समय में उत्तर पश्चिम में किसका राज्य था।

(अ) चालुक्य वंशीय राजाओं का (ब)यवनों का

(स)सातवाहन राजाओं का (द)पल्लव राजाओं का

१६. शरीर के लक्षणों को देखकर शुभ-अशुभ फल का वखान किया जाता है।

(अ) अंगविज्जा (ब)जोणि पाहुण

(स) प्राकृत प्रकाश (द)गहासत्तसई

१७. तृतीय स्तरीय प्राकृत के समय लिखे गये।

(अ) अशोक के शिलालेख (ब)आगम

(स) पउमचरियं (द)वसुदेव हिंडी

१८. प्राकृत व्याकरण में सबसे प्राचीन गंथ है।

(अ) गाहासत्तसई (ब)प्राकृत प्रकाश

(स) कुवलयमाला (द)समराइच्चकहा

१९. रामकाव्य परम्परा का प्रथम गं्रथ है।

(अ) मृच्छकटिक (ब)कुवलयमाला

(स) जैन रामायण (द)प्राकृत प्रकाश

२०. डॉ. राजमल बोहरा के अनुसार पाणिनि की मातृ भाषा थी।

(अ) संस्कृत (ब)अपभ्रंश

(स) प्राकृत (द)सभी

२१. भरधवस शब्द का उल्लेख मिलता है।

(अ) अशोक के शिलालेख (ब)खारवेल के शिलालेख

(स) सातवाहन राजाओं के प्राकृत शिलालेख (द)चन्द्रगुप्त वसति के प्राकृत शिलालेख

२२. आप्तोपदेश: शब्द: निरूपित करता है-

(अ) आगम को (ब)साहित्य को

(स)आयत को (द)इनमें से कोई नहीं

२३. आचारांग का द्वादशांग में स्थान है-

(अ) चर्तुथ (ब)प्रथम

(स)द्वितीय (द)द्वादश

२४. अंग साहित्य का सार है।

(अ) सूत्रकृतांग (ब)स्थानांग

(स) आचारांग (द)विपाक सूत्र

२५. आश्रव और बंध का सजीव चित्रण है।

(अ) प्रश्र व्याकरण सूत्र (ब)अनुत्तरोपपातिक

(स)उपासक दशांग (द)व्याख्या प्रज्ञप्ति

२६. द्वादशांग में जीवन और जगत का विश्लेषण करने वाला ग्रन्थ है।

(अ) समवायांग (ब)व्याख्या प्रज्ञप्ति

(स)आचारांग (द)सूत्रकृतांग

२७. श्रावकाचार का निरूपण द्वादशांग के सूत्र मेंे है।

(अ) उपासक दशांग (ब)समवायांग

(स)प्रश्न व्याकरण सूत्र (द)स्थानांग

२८. समवायांग में दृष्टिवाद के विभाग है।

(अ) ८ (ब)६

(स)९ (द)५

२९. जैन वाङ्मय का प्रथम उपांग है।

(अ) समयसार (ब)नियमसार

(स) तत्त्वार्थसूत्र (द) इनमें से कोई नहीं

३०. भगवान महावीर के समवशरण का सजीव चित्रण वाला उपांग है।

(अ) प्रज्ञापना (ब)औपपातिक

(स)राजप्रश्नीय (द)कल्पावतंसिका

३१. राजप्रश्नीय उपांग के प्रथम भाग में वर्णन है।

(अ) सूर्याभ देव (ब)मुनिकेशी

(स)कुन्दकुन्द (द)हरिभद्र सूरी

३२. सूर्याभ देव ने भगवान महावीर की सभा नाटक दिखाये।

(अ) ३६ (ब)४८

(स)१२ (द)३२

३३. जैन उपांग साहित्य में जैन तत्त्व ज्ञान का उद्‌बोधक सूत्र है।

(अ) राजप्रश्नीय (ब)सूर्य प्रज्ञप्ति

(स)प्रज्ञापना (द)पुष्पिका

३४. उपांग साहित्य में प्रज्ञापना सूत्र का वही स्थान है जितना अंग साहित्य में-

(अ) राजप्रश्नीय (ब)व्याख्या प्रज्ञप्ति

(स)सूर्य प्रज्ञप्ति (द)जीवाजीवाभिगम

३५. जैैन तत्त्वज्ञान का केन्द्रीय बिन्दु है।

(अ) जीव (ब)अजीव

(स)काल (द)धर्म

३६. तीर्थंकर पाश्र्वनाथ की परम्परा के श्रमण केशीकुमार मुनिद्‌वारा तर्क पूर्ण समाधान प्रस्तुत करने वाला उपांग है।

(अ) जीवाजीवाभिगम (ब)राजप्रश्नीय

(स)जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (द)प्रज्ञापना

३७. २५ आर्यदेशों का उल्लेख करने वाला उपांग है।

(अ) सूर्य प्रज्ञप्ति (ब)राजप्रश्नीय सूत्र

(स)निरयावलिका (द)प्रज्ञापना सूत्र

३८. सूर्यप्रज्ञप्ति उपांग में मूल मान्यताओं को जानने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

(अ) ज्योतिष (ब)जीव

(स) साधना (द)संगीत

३९. चन्द्र और सूर्य द्वारा प्रकाशित होने वाले द्वीप समूहों का उल्लेख प्राप्त होता है।

(अ) जीवाजीवाभिगम (ब)सूर्य प्रज्ञप्ति

(स)जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (द)प्रज्ञापना

४०. सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रों की गतियों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है।

(अ) जीवाजीवाभिगम (ब)राजप्रश्नीय

(स) सूर्य प्रज्ञप्ति (द)प्रज्ञापना

४१. दो सूर्य और दो चंद्रमा के प्रतिपादन करने वाल उपांग है।

(अ) जीवाजीवाभिगम (ब)राजप्रश्नीय

(स) निरयावलिका (द)सूर्य प्रज्ञप्ति

४२. प्राचीन भूगोल को जानने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण उपांग है।

(अ)जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (ब)राजप्रश्नीय

(स) निरयावलिका (द)प्रज्ञापन

४३. भरत के जीवन चरित्र का वर्णन है।

(अ)निरयावलिका (ब)राजप्रश्नीय

(स) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (द)प्रज्ञापन

४४. चन्द्रमा की प्रतिदिन की योजनात्मिका गति का निरूपण किया गया।

(अ)चन्द्रप्रज्ञप्ति (ब)राजप्रश्नीय

(स) निरयावलिका (द)प्रज्ञापन

४५. तीर्थंकरों का जन्मोत्सव मनाने के लिए कुमारियाँ आती है।

(अ)५८ (ब)५६

(स) २८ (द)३२

४६. दुर्गति में जाने वाले जीवों का पंक्तिबद्ध वर्णन करने वाला सूत्र है।

(अ)चन्द्रप्रज्ञप्ति (ब)राजप्रश्नीय

(स) निरयावलिका (द)प्रज्ञापन

४७. राजा श्रेणिक के १० पुत्रों का चरित्र चित्रण का वर्णन है।

(अ)सूर्य प्रज्ञप्ति (ब)निरयावलिका

(स) राजप्रश्नीय (द)प्रज्ञापन

४८. चन्द्र, सूर्य, महाशुक्र आदि देवों का वर्णन करने वाला उपांग है।

(अ)सूर्य प्रज्ञप्ति (ब)निरयावलिका

(स) राजप्रश्नीय (द)पुष्पिका

४९. श्रीदेवी, ह्रीदेवी आदि १० स्त्रियों की कथाएँ बताने वाला उपांग है।

(अ)पुष्पचूला (ब)निरयावलिका

(स) राजप्रश्नीय (द)प्रज्ञापन

५०. गाहा छन्द के समान संस्कृत का कौन सा छन्द है।

(अ) मात्रिक छन्द (ब) आर्या छन्द

(स) मात्रा छन्द (द)वर्णिक छन्द

राजा बलदेव के निषिधकुमार आदि १२ पुत्रों द्वारा नेमिनाथ के पास दीक्षित लेने का वर्णन करने वाला उपांग है।

(अ)सूर्य प्रज्ञप्ति (ब)निरयावलिका

(स) पुष्पचूला (द)प्रज्ञापन

५२. तीर्थंकरों की धर्मसभा को कहते है।

(अ)देवभवन (ब)सभा भवन

(स) राजभवन (द)समवशरण

५३. वैशाली नरेश चेटक एवं मगध नरेश कुणिक के बीच हुए संग्राम का वर्णन करने वाला उपांग है।

(अ)औपपातिक (ब)निरयावलिका सूत्र

(स) पुष्पचूला (द)प्रज्ञापन

५४. यादव वंश का प्रागैतिहासिक विवरण को वर्णित करने वाला उपांग है।

(अ)सूर्य प्रज्ञप्ति (ब)राजप्रश्नीय

(स) निरयावलिका (द)प्रज्ञापन

५५. भगवती विशेषण से विभूषित किया गया उपांग है।

(अ)प्रज्ञापना सूत्र (ब)राजप्रश्नीय

(स) निरयावलिका (द)औपपातिक

५६. जैन अर्धमागधी आगम-साहित्य का नवनीत कहा जाता है।

(अ)आवश्यक (ब)नंदी

(स) उत्तराध्ययन (द)अनुयोगद्वार

५७. भोगो के प्रति आसक्ति को मिटाने के लिए आवश्यक है।

(अ)तामसिक भोजन (ब)संयम पालन

(स)कलुषित वस्त्र (द)ज्यादा आराम

५८. श्रमण जीवन के लिए अनिवार्य आचार से संबंधित नियमों का संयोजन करने वाला मूलसूत्र है।

(अ)दशवैकालिक (ब)नन्दी

(स) उत्तराध्ययन (द)आवश्यक

५९. महावीर की अंतिम देशना के रूप में स्वीकारित मूलसूत्र है।

(अ)उत्तराध्ययन (ब)आवश्यक

(स) पिण्डनिर्युक्ति एवं ओघनिर्युक्ति (द)दशवैकालिक

६०. दशवैकालिक के अनुसार समस्त व्रतों में सर्वोपरि व्रत है।

(अ)सत्य (ब)अहिंसा

(स)अपरिग्रह (द)अचौर्य

६१. प्रत्याख्यान का अर्थ है।

(अ)निद्रा का त्याग (ब)समभाव की साधना

(स)आहारादि का त्याग (द)गुणगान करना

६२. प्रतिक्रमण का अर्थ होता है।

(अ)दोषों की आलोचना (ब)ममत्व का त्याग

(स)अपरिग्रह (द)वंदना करना

६३. जीवन शुद्धि और दोष परिमार्जन का महासूत्र है।

(अ)आहारादि का त्याग (ब)आवश्यक

(स)अपरिग्रह (द)वंदन

६४. मन वचन काय को वश में कर रागद्वेष से अलग हटकर समभाव में स्थित होना-

(अ)अर्चाैय है (ब)सत्य

(स)ब्रह्मचर्य है (द)सामायिक है

६५. मन, वचन काय से स्वयं किये पाप, दूसरों से करवाये पाप की आलोचना करना एवं निंदा है।

(अ)प्रतिक्रमण (ब)अहिंसा

(स)सत्य (द)ब्रह्मचर्य

६६. इच्छाओं का त्याग करना एवं मर्यादा के साथ प्रतिज्ञा ग्रहण करना वाला आवश्यक है।

(अ)अहिंसा (ब)वंदना

(स)प्रत्याख्यान (द)कायोत्सर्ग

६७. शारीरिक चंचलता एवं देह आसक्ति का त्याग बताने वाला आवश्यक है।

(अ)कायोत्सर्ग (ब)वंदना

(स)प्रतिक्रमण (द)सामायिक

६८. श्रमणों की सामान्य समाचरी को प्रतिपादित करने वाला मूलसूत्र है।

(अ)दशवैकालिक (ब)नन्दी

(स)उत्तराध्ययन (द)पिण्डनिर्युक्त एवं ओघनिर्युक्त

६९. नन्दीसूत्र का प्रमुख विषय है।

(अ)ज्ञानवाद (ब)अहिंसावाद

(स)सत्याचरण (द)अचौर्यवाद

७०. नन्दीसूत्र के अनुसार ज्ञान के भेद है।

(अ)४ (ब)५

(स)२ (द)८

७१. महत्वपूर्ण जैन पारिभाषिक शब्द-सिद्धान्तों का विवेचन करने वाल मूलसूत्र है।

(अ)अनुयोगद्वार (ब)आवश्यक

(स)दशवैकालिक (द)नन्दी

७२. अनुयोगद्वार सूत्र में काव्य के रसों का वर्णन किया गया है।

(अ)८ (ब)१२

(स)९ (द)६

७३. जैनाचार की कुंजी है।

(अ)छेदसूत्र (ब)अनुयोगद्वार

(स)उत्तराध्ययन (द)दशवैकालिक

७४. जीवन की पवित्रता को बनाये रखने वाले उत्तम श्रुत है।

(अ)गृहस्थ (ब)श्रमण

(स)स्त्री (द)व्रती

७५. जिन ग्रथों में श्रमण जीवनचर्या के मूलभूत नियमों का वर्णन हुआ वे है-

(अ)द्रव्यानुयोग (ब)छेदसूत्र

(स)करणानुयोग (द)मूलसूत्र

७६. प्राणियों के प्रति करूणा की भावना अभिव्यक्त करने वाला मूलसूत्र है।

(अ)नन्दी (ब)उत्तराध्ययन

(स)दशवैकालिक (द)आवश्यक

७७. समता की उत्कृष्ट साधना है।

(अ)समता (ब)अहिंसा

(स)अपरिग्रह (द)अचौर्य

७८. वैदिक युग में कथ्यभाषा के रूप में प्रचलित भाषा थी।

(अ)हिन्दी (ब)संस्कृत

(स)प्रादेशिक प्राकृत (द)उर्दू

७९. आगम युग की भाषा है।

(अ)प्रथम स्तरीय प्राकृत भाषा (ब)द्वितीय स्तरीय प्राकृत भाषा

(स)तृतीय स्तरीय प्राकृत भाषा (द)इनमें से कोई नहीं

८०. आप्त के वचनादि के निमित्त से होने वाले अर्थज्ञान को कहते है।

(अ)आलोचन (ब)सामान्य ज्ञान

(स)आगम (द)विपर्यय ज्ञान

८१. भगवान बुद्ध के उपदेश त्रिपिटक लिपिबद्ध है।

(अ)मागधी (ब)शौरसेनी

(स)हिन्दी (द)अर्धमागधी

८२. पारसी धर्म के संस्थापक जरथुस्ट्र की अवेस्तन गाथाएँ पहलवी भाषा में लिपिबद्ध हुई।

(अ)१८०० वर्ष बाद (ब)१२०० वर्ष बाद

(स)१५०० वर्ष बाद (द)६०० वर्ष बाद

८३. शौरसेनी परम्परा में द्वादशांग के आधार से तीर्थंकर महावीर के आचार्य शिष्यों द्वारा रचा गया श्रुत है।

(अ)अंगबाह्य (ब)अंग प्रविष्ट

(स)ज्ञातृधर्मकथा (द)समवायांग

८४. कषाय पाहुड का दूसरा नाम है।

अ)समयसार (ब)प्रवचनसार

(स)पेज्यदोसपाहुड (द)अष्टपाहुड़

८५. कर्मसिद्धांत का विश्लेशण करने वाला शौरसेनी प्राकृत का प्रथम ग्रंथ है।

(अ)कषाय पाहुड (ब)प्रवचनसार

(स)वसुदेवहिंडी (द)अष्टपाहुड़

८६. आचार्य नागहस्ती का समय है।

(अ)१०८ ईसा पूर्व (ब)७० अईसा पूर्व

(स)१२० ईसा पूर्व (द)१०४ ईसा पूर्व

८७. षट्खण्डागम गं्रथ के रचनाकार है।

(अ)आचार्य धरसेन (ब)आचार्य पुष्पदंत भूतवली

(स)आचार्य पूज्यपाद (द)आचार्य समन्तभद्र

८८. छेदसूत्र की संख्या मानी गई है।

(अ)२० (ब)८

(स)३ (द)६

८९. षट्खण्डागम गं्रथ के आधार पर शौरसेनी प्राकृत एवं संस्कृत भाषा में लिखी गई टीका धवला में श्लोक है।

(अ)१२००० (ब)२००००

(स)७२००० (द)३२०००

९०. धवला ग्रंथ के आधार पर आचार्य धरसेन द्वारा रचित टीका जयधवला में श्लोकों की संख्या है।

(अ)९२००० (ब)११२०००

(स)१२०००० (द)१५००००

९१. धवला टीका का रचना काल है।

(अ)७१५ ईसवी (ब)८१६ ईसवी

(स)५१२ ईसवी (द)९६० ईसवी

९२. शौरसेनी परम्परा में अंगबाह्य के भेद है।

(अ)२० (ब)८

(स)३ (द)१४

९३. अर्धमागधी परम्परा में लुप्त माना गया है।

(अ)समवायांग (ब)आचारांग

(स)दृष्टिबाद (४)सूत्रकृतांग

९४. पंचास्तिकाय में विवेचन किया गया है।

(अ)छः द्रव्य (ब)सात तत्व

(स)पाँच पाप (द)नवपदार्थ

९५. अष्टपाहुण में सम्मलित ग्रंथ है।

(अ)समयसार (ब)बारस अणुवेख्खा

(स)प्रवचनसार (द)दर्शनपाहुड

९६. बारस अणुवेख्खा में वर्णन है।

(अ)पाचँ समितियों का (ब)पंच स्थावरों का

(स)बारह भावनाओं का (४)बारह तपों का

९७. आचार्य कुन्दकुन्द के अनुसार आत्मा अस्तित्व वाला है।

(अ)स्वतंत्र (ब)परतंत्र

(स)पराश्रित (द)कोई नहीं

९८. जिसमें रूप, रस, गंध, वर्ण चारों पाये जाते है वह है-

(अ)धर्मद्रव्य (ब)पुद्गल

(स)कालद्रव्य (द)जीव

९९. आध्यात्मिक दृष्टिकोण से जीव के प्रकार है-

(अ)२ (ब)८

(स)३ (द)६

१००. एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में गमन करने की क्रिया में जो सहायक होता है वह -

(अ)धर्मद्रव्य (ब)अधर्मद्रव्य

(स)आकाशद्रव्य (४)काल द्रव्य

उत्तर कुंजी

१	द	११	ब	२१	ब	३१	अ	४१	द
२	अ	१२	अ	२२	अ	३२	द	४२	अ
३	अ	१३	स	२३	ब	३३	स	४३	स
४	द	१४	अ	२४	स	३४	ब	४४	अ
५	अ	१५	ब	२५	अ	३५	अ	४५	ब
६	अ	१६	अ	२६	ब	३६	ब	४६	स
७	ब	१७	द	२७	अ	३७	द	४७	ब
८	द	१८	ब	२८	द	३८	अ	४८	द
९	अ	१९	स	२९	द	३९	ब	४९	अ
१०	स	२०	स	३०	ब	४०	स	५०	ब
51	स	61	स	71	अ	81	अ	91	ब
52	द	62	अ	72	स	82	स	92	द
53	ब	63	ब	73	अ	83	अ	93	स
54	स	64	द	74	ब	84	स	94	अ
55	अ	65	अ	75	द	85	अ	95	द
56	स	66	स	76	स	86	अ	96	स
57	ब	67	अ	77	अ	87	ब	97	अ
58	अ	68	द	78	स	88	द	98	ब
59	अ	69	अ	79	ब	89	स	99	स
60	ब	70	ब	80	स	90	अ	100	अ